

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

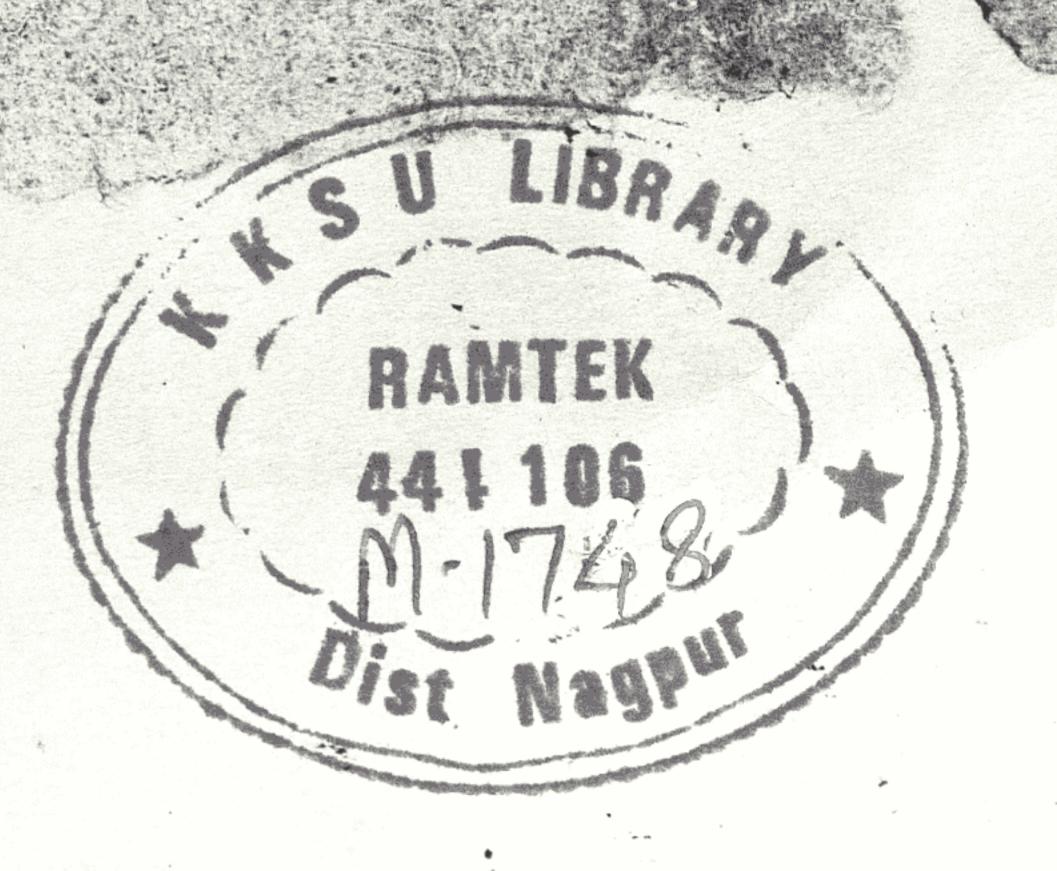
Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

स्वास्तिम्बाह् व्यायास्त्राम् मार्वपादेव स्वासायम् व्याद्धः मार्वपादेव स्वासायम् व्याद्धः मार्वपादेव स्वासायम् व्याद्धः मार्वस्वास्त्राम् स्वास्त्रम् मार्वस्त्रम्यात् स्वास्त्रम्यात् स्वस्त्रम्यात् स्वस्त्रम्य

Checked 2012



त्रिवन्गत्रहादमहाह्मदमेद्दरस्य वेस्तं॥५॥अत्रवसरे युन्यः त्रोचुः॥धन्याधेषाध प्रवीद नुजकुलपतेः संपद स्त क्रतार्थाः पुरुषात्मानश्व स्वीचर तर मधुनाधाम दिन्यमे ने युः॥ धन्यं चे तत्कुलि तो सकलम्यविभो जन्मचे दं क्षतार्थं स्तु भी ग्ये क्रसिं धुः समज निसद ने के विक् कत्याण स्विः॥६॥सन्य मस्वे वर्षा मजन के नत्र शोष दे नी ति नपं ज्ञात् कु शायधिष णाय स्विः॥६॥सन्य मत्र वर्षा वर्षा वर्षा स्वरम्य त्या स्वरम्य स्वरम्य

धामर्स्कात्रतस्ये॥ततः त्रिष्योपिएछत्तत्र्छीचलिन्नयंत्रमयधानमित्रमयो चेर्तवन् दितिस्ततं चेर्तप्रदेषप्रदेशप्रदेषप्रदेशप्रदेषप्रदेशप्र

महित्रांष्ठमाकंप्रनीयंचेन सुर्रेष्ठः॥९७॥षाता॥र नुताधिए कर्णगिषिनीतववाणीसु त माभवित्यं॥यर वध्वचीन भूपितः सहतेनीतिषणः प्रकृतिकः॥१८॥सुतः॥सुपि ने। जनकस्तिथा पिनेन विश्वामाज्ञग्री चालेवने॥ मदाकोषिति पानभीति तः सर्वे मुच्निति क्रिंगिजंत्रनः॥९०॥ अत्रतंतरे राजापिसभाष्यं नार्वाण्यं ते प्रवृत्ति हर्षाने हकारकं॥२०॥॥ क्रिंगिजंत्रवस्त्रये यते गुरुरणकि पिने विश्वितामात्र प्रतृति हर्षाने हकारकं॥२०॥॥ त्रकारः॥ अवस्त्रयं कुलम् नार्रेष्णीयं वित्रते मत्रम् स्वीत्रया प्रधाप्त श्रारेणीकरणी, यंत्री स्वाप्त व त्रतंत्ररणीयं॥२०॥ पिना॥ रेवत्तवित्तवारात्ता स्वाप्त प्रति। व स्वाप्त वित्रवित्तवारितः प्रश्वा तम्येन विश्वितो सि कस्तेष्रा घरित्रा तत्त्र समयं प्राह् गुरुरः॥ व सुधावितिवारितः पुरा व स्वनं ना हत्रवाने सो श्रिशा ह्यु जा श्रित्ते त्रवा स्वतः श्राप्तीका वित्र स्वनं मान्य ॥ रूर्शन् व स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्व मसंबद्विपशीयपश्चाने स्विकागुरः। २३॥ शिष्यः॥ सर्विव्यानि चिर्वे वा पर मात्माहि दिखितिः॥ सर्वसा सी विदान देः करणा द्विः समे गुरुः॥ २४॥ पिता ॥ पर की यम ता नसंव नये विद्दे हे ति सर्गे के मित्रे अपने में के स्वे में स्वा स्व पर भिव्य ति ॥ प्रशासक के न मन्वे प्रस्ते न प्रमानि के से पर वा ॥ मति प्रनः का भवता है तो सी मो च्या सर्वि मिर्व धारिण २६ ॥ स्वतः ॥ प्रणानि न मनो निष्ठ पर्वे न प्रे ते वे ॥ न्य पा स्व स्व पर पर वा भवता भवता । स्व स्व पर पर वा भवता । स्व । स्व

मालादमा ३१॥ त्र भिन्ने हकेते विद्याचित चंद्र का बोप्यमत्त्र कः ॥। भिन्नो विचनम् कं मिन्ने क्रिकेत विद्याचित चंद्र का बोप्यमत्त्र कः ॥। भिन्नो विचनम् कं मिन्ने क्रिकेत क्रिकेत क्रिकेत क्रिकेट क्षित्र क्रिकेत क्रिके

सामविद्यदित दाकिमुनास्त्रः त्वेत्रार्वित्र द्यं विद्यं व्याः ॥६॥ भारणागतवज्ञ पंजरं करणाद्र देनती वन्तर्भिः हिदि वित्र महत्व ॥ भव क्या ना गण्या प्रदात्र वेद्र ना ॥ ७॥ हतः त्राह्मुहतः ॥ ७॥ ना द्र मिद्र प्रदाति धन्यस्तर्भा द्र प्रदार विदेश क्या भि हा महत्व क्या प्रताति ॥ यः साद्र हिदसदा । अद्यानि धन्यस्तर्भा ने का दिष्य ये स्वान्त के क्या प्रतात् । अत्र का स्वान्त के स्वान के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान स्वान्त के स्वान के स्वान के स्वान्त के स्वान के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान्त के स्वान के स

हाथ

ज्यतर्नत्रह्यां व्यक्तिश्रीति तंनिति स्थंते यहामं ता र नु ज स्वा श्वारे । सः सुरोगं तुर्मा शामा स्मार्का र क्रमार्थने व जिस्ता र समार्थने व जिस्ता र समार्थने व जिस्ता र स्मार्थने व ज्या र स्मार्थने समार्थने समा

धिकमाधुरां वर्त्तत्वयसेगरसानियाजि। मनसोव च सो नगो च्रो मिहमामुख्य विचित्रकृत्रणः। १९८०। तत्रो विस्तितः त्राहरा जा ॥ यस्त्रसं जातम घापित दंगं त्वियिनी स्थते। सिमेत स्पर्धित्वा त्व स्वाभाविको गुणः। १६०। सुतः। विषविषये वस्त्र देशानु वा चा। १९ श्वे वस्त्र स्त्र वा विषये। भूते च स्त्र वे द्रम ते वा विषये। भूते च स्त्र वा विषये। भूते च स्त्र वे द्रम ते वा विषये। भूते च स्त्र वे स्त्र वा विषये। भूते। स्त्र वे स्त्र स्त्र के सा स्त्र के सा स्त्र के सा स्त्र वे स्त्र वे स्त्र वे स्त्र वि स्त्र स्त्र वे स्त्र वे स्त्र वे स्त्र वे स्त्र वे स्त्र वि स्त्र स्तर के सा स्त्र के सा स्त्र वे स्त्र के सा स्त्र के सा स्त्र वे स्त्र वे स्त्र स्त्र वे सा स्त्र वि सा सा स्त्र वि सा सा सा वि सा वि सा सा वि सा

विसय

्यावसरेप्रकारः॥वेदाः विज्ञ विमान्य मार्षिती एगः समस्ति स्याः दिदेवाः प्रवयंगनाः क्रिमं सुनावित्राशिष्ठाः दे हिमधुस्र मः दिस्यानास्त प्रः क्षिमं प्राप्ताः सामम् वितयं र ॥ भारिदे हु सम्बन्धः सम्पादे सम्पादे

येदुर्तभाक्षितंत्रहत्तरघस्यंयदिशोषितोर्भकः॥३२॥ततोवायुःशिशोःसमीणेरगवंतंबीर्यमा
एःप्राहरनुनैप्रति॥अतसीनुस्प्रानुकारिकातिःपुरुष्ठाः किएपुरःप्रतीयमानः॥अपमुद्रहते मु नंगरान्तरस्भां सस्देश्वते निद्रशः॥३३॥वियहेणिशिष्टुरेहिनिवष्टंवापुमंतरगतोहिर हारात्र कोलभेतव यसान् कुष्टेरात्मधान मंघसंघितिष्टः॥३४॥ततेरात्तारेत्याः संप्रतिष्टुरात्मक्षेत्रमा पाशि विधाणे विश्वच्यताप्रितिप्राह्॥णेविंदमाध्यहरेभगवन्युरारेगण्यणाच्यत्तानार्देन की नवं धी॥ एयं बुवाण मच्यादर्मा श्ववधायाचो निधीदितस्तावत्ति सुपुस्तं॥३५॥ अत्रनावत्रस्ते प्रताहः कुंभो द्रवेनम्विनावतशोषितस्त्रसंप्रदिनोपित्रिणापुनरं प्रिनीर्देः॥ मत्रवापितः समर्था चेद्रप्रका रमेनंत्रदाण्ये मिपविधेहि समामिशानीं॥३६॥ स्वयान्यहरेक्षेत्रन्तक्रिश्च प्रवृविगोगुत्तिमतेन लानको स्वयानम मर्जनगत्॥३७ ग्रम्थ पत्रस्वीप्रित्यक्ताःश्चेत्रारारिभिः॥तत्वापिक्षेत्रम् तप्राच्यात्रम्यस्य विधि । । । । । । तत्रावाद्याप्रत्यात्रम्यान्यस्य स्वराह्यस्य स्वराह्य

निह्माधितेत्रतिमद्द्र्युद्देन्सं अवश्वादित्रीयस्ववर्तः॥ ॥ ततत्रह्मादोक्तर्यमस्मा नादे सः त्राहः॥ महीस्मात्रिक्तं जतस्त्रवहिर्नायातिमस्तिधी तरो हुं बद्रोत्सिक्षात्व कथामता नादे सः त्राहः॥ महीस्मात्रिक्तं त्राह्माने क्षात्व कथामता त्राह्माने क्षात्व क्षामता वित्र स्थाने क्षात्व क्षात्व क्षात्र त्राह्माने क्षात्व क्षात्र त्राह्माने क्षात्व क्षात्र त्राह्माने क्षात्व क्षात्र क्षात्व क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्व क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्व क्षात्र क्षात्र

चुँ वितोभगवानि खित्रमविना उपत्वामेव सहिए ध्यति सिवित मिवित मिवित मिवित मिवित मिवित मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा मिवित सिवा मिवा सिवा मिवित सिवा मिव

निषरंभ्रमीभयाद्धस्वतः।श्रम्भेगितिनिधिदश्यन्यनाः त्राणा जहुर्रन्वाः पुत्रान्तः पिर्पाः त्रयेति रारणं वीराय पुश्चापरे । ११ श्रिक्तं स्प्रमित्र स्प्रमित्र स्प्रमित्र विद्यम्पति न्योपस्य । १ श्रेष्ट्र स्प्रमित्र न्योपस्य अद्याभ्य वात्र विक्रं त्यो नस्पास्य ति नायते । १ श्रेष्ट्र स्प्रमित्र नरहरेः त्राणा जित्र सूत्र हे कालिस् विष्ठ विक्रं त्यो नस्पान्य स्प्रमान्य स्पर्ण स्प्रमान्य स्पर्ण स्प्रमान्य स्पर्ण स्प्रमान्य स्पर्ण स्प्रमान्य स्पर्ण स्प्रमान्य स्पर्ण स्प्रमान्य स्पर्ण स्परमान्य स्पर्ण स्पर्ण स्पर्ण स्पर्ण स्पर्ण स्परमान्य स्पर्ण स्परम्ण स्पर्ण स्पर्ण

लिमनिप्शाच्यध्यनमीनम्नोहरकीर्सिपराक्रमसुरगणकात्यितका समहीहहन द् नेष्ठध्यविराजिनरत्निकिरिकास्वरमस्तक रात्रम्रवसुरव्यमहरूण च स्मित्रमा रहतं बुरसनक सनंदन नामनराजिए विहिन परस्तव पादस्ति हिणाल में पाल में नाम हरे। के पिनाध्याः। श्रीमहे कुँ हो हो दवन बिन करा कर्णनक्षां सधावक्ष के सिह्न नामें इ इयविगतस्व क्षेत्रस्ता मानानां। माळातारावली गं विवसति च पतदा ननी रेपपो धिने विदेश स्वान त्रात्र स्वान सिहने कि विदेशानुनारावितर पत्रवरणः सामरोक्षी कुनस्यः। २०११ कि स्वान हिल्ली सिहने कि प्यमान में रिने के संवाह मंडल मन्न में नित्रा स्वयंद कि स्वान हिल्ली स्वान है। प्राप्त सिहने कि विना वित्र सिहने कि स्वान सिहने कि सिहने

नोडिब्रासणी श्री व्यवस्थित स्वर्धित नवा भोष्या श्रिया वहित्र स्वापा पते व्यवसाय के प्रवस्था स्वर्धित स्वर्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्यंत्र स्वर्यंत्र स्वर्यंत स्वर



,CREATED=23.10.20 11:20 TRANSFERRED=2020/10/23 at 11:22:30 ,PAGES=11 ,TYPE=STD ,NAME=S0004455 Book Name=M-1748-PRAHLAD CHAMPU ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=00000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF ,FILE11=0000011.TIF

[OrderDescription]